क्या यह उचित है कि एक विश्वासयोग्य मसीही, प्रभु से
प्रार्थना करे कि वह किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को स्वर्ग
में किसी अच्छे स्थान पर ठहराए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

उत्तर: नहीं, यह उचित नहीं है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो उसका अनंत भविष्य निर्धारित हो जाता है। बाइबल सिखाती है कि मनुष्य को केवल एक बार मरना है, उसके बाद न्याय आता है:

“और जैसा मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय
होना निश्चित है,”
— इब्रानियों 9:27 (ERV-HI)

मसीहियों के रूप में, हमें जीवित रहते हुए एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा दी गई है:

“इस कारण तुम एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, कि चंगे हो जाओ। धर्मी जन की प्रभावशाली प्रार्थना बहुत कुछ कर सकती है।”
— याकूब 5:16 (ERV-HI)

क्या यह उचित है कि एक विश्वासयोग्य मसीही, प्रभु से
प्रार्थना करे कि वह किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को स्वर्ग
में किसी अच्छे स्थान पर ठहराए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

परंतु बाइबल में कहीं भी मृतकों के लिए प्रार्थना करने का आदेश नहीं है, न ही ऐसा कोई संकेत मिलता है कि हमारी प्रार्थनाएँ किसी मृत व्यक्ति की अनंत दशा को बदल सकती हैं।

मृत्यु और अंतिम संस्कार को लेकर विश्वासियों और अविश्वासियों की समझ अलग-अलग होती है। जो मसीह में विश्वास नहीं रखते, उन्हें मृत्यु के बाद की आशा का ज्ञान नहीं होता, इसलिए वे अक्सर बिना समझ के बातें करते हैं। लेकिन हम जानते हैं कि यदि कोई भाई या बहन प्रभु में मरता है, तो हमारे पास पुनरुत्थान की धन्य आशा है, क्योंकि मसीह में मरना नींद जैसा है:

“हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उन के विषय में जो सो गए
हैं, अनजान रहो, कि तुम उन औरों की नाईं शोक न करो जिन की कोई
आशा नहीं। क्योंकि जब हम विश्वास करते हैं, कि यीशु मरा और
जी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन को भी जो यीशु में सो गए हैं,
उसी के साथ ले आएगा।”
— 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–14 (ERV-HI)

परन्तु जो बिना मसीह के विश्वास के मरते हैं, वे परमेश्वर के न्याय के अधीन रहते हैं:

क्या यह उचित है कि एक विश्वासयोग्य मसीही, प्रभु से
प्रार्थना करे कि वह किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को स्वर्ग
में किसी अच्छे स्थान पर ठहराए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दोष नहीं लगाया जाता,
परन्तु जो विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं
किया।”
— यूहन्ना 3:18 (ERV-HI)

यीशु ने अपने अनुयायियों को यह आदेश दिया था कि वे संसार भर में जाकर सुसमाचार सुनाएँ और लोगों को चेला बनाएं:

“उस ने उन से कहा, सारी दुनिया में जाकर सारी सृष्टि के
लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करेगा और
बपतिस्मा लेगा वह उद्धार पाएगा; पर जो विश्वास नहीं करेगा
वह दोषी ठहरेगा।”
— मरकुस 16:15–16 (ERV-HI)

कहीं भी यह नहीं कहा गया कि हमें मरे हुए लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए या यह मांग करनी चाहिए कि परमेश्वर उनकी आत्मा को मरने के बाद किसी अच्छे स्थान में रखे।

निष्कर्ष: उद्धार का बुलावा जीवितों के लिए है – अब वह समय है जब हमें विश्वास करना और उद्धार पाना चाहिए। मृत्यु के बाद न्याय

क्या यह उचित है कि एक विश्वासयोग्य मसीही, प्रभु से
प्रार्थना करे कि वह किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को स्वर्ग
में किसी अच्छे स्थान पर ठहराए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

आता है – परिवर्तन का कोई और अवसर नहीं।

इसलिए, बाइबल के अनुसार यह उचित नहीं है कि कोई मसीही प्रभु से प्रार्थना करे कि वह किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को स्वर्ग में किसी अच्छे स्थान पर ठहराए। हमारी आशा केवल मसीह में है, और उद्धार इसी जीवन में स्वीकार करना आवश्यक है।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

Share on:
WhatsApp